परिवर्तन
PARIVARTAN

कृषि संदेश

(खरीफ विशेषांक)

वर्ष : 2016. अंक : 5

कृषि समुदाय के लिए तक्षशिला की एक पहल

सम्पादकीय

मौसम विभाग द्वारा वर्षा की अच्छी उम्मीद बताई जा रही है ऐसी स्थिति में प्रजातियों का चुनाव खेत की परिस्थिति, सिंचाई की उपलब्धता तथा संसाधनों को ध्यान में रखकर करना होगा। जीरो टिल मशीन से धान की सीधी बुआई करने से लागत में कमी आयेगी, बुआई हर हालत में मानसून आने के 10–15 दिन पहले संपन्न हो जानी चाहिए, जिससे धान की जड़े अपना स्थान बना ले। धान की सीधी बुआई निचली खेत में जिसमे थोडा पानी ठहरता हो उचित रहता है। बुआई के दूसरे दिन खरपतवारनाशक का छिडकाव करना आवश्यक है।

भारत ही नहीं वरन पूरे वैश्विक स्तर पर दालों की कमी महसूस की जा रही है इस तथ्य को मद्दे नजर रखते हुए संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2016 को अन्तर्राष्ट्रीय दलहन वर्ष घोषित किया है। खरीफ में अरहर की खेती शुद्ध तथा मक्का/उरद/मूंग के साथ मिलवा फसल के रूप में छिटकवा विधि से की जाती है। अरहर की फसल में सामान्य रूप से उर्वरक, सिंचाई, निराई तथा कीट /व्याधियों से रक्षा आदि पर ध्यान नहीं दिया जाता है। आज के समय में जब अरहर की दाल 200/रुपया प्रति किलो बिक रही है किसान भाई उन्नतशील विधियों से अरहर की खेती करके कम लागत में ज्यादा मुनाफा कमा सकते है। यदि किसान भाई अरहर की फसल में कल्चर, फॉस्फोरस एवं सल्फर का प्रयोग, मेंढ़ पर उचित दूरी पर बुआई, समय पर खरपतवार नियंत्रण, कन्तिक अवस्थाओं पर सिंचाई एवं फली वेधक कीटो के नियंत्रण पर ध्यान दे तो निश्चित रूप से भारी मुनाफा कमा सकते हैं।

परिवर्तन प्रांगन में स्थित हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र किसानों को खेती की नवीनतम ज्ञान प्रदान करने हेतु समर्पित है परिवर्तन किसान क्लब राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय पूसा एवं भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, पूसा से धान, मक्का, अरहर तथा सब्जियों के बीज मंगाकर किसान भाइयों को उपलब्ध करा रहा है परिवर्तन में विभिन्न कृषि यन्त्र जैसे – रिज प्लान्टर, रेज्ड बेड प्लान्टर ,जीरो टिल मशीन एवं मिटटी पलटने वाला हल उपलब्ध है किसान भाई इसे ले जाकर अपनी बुआई संपन्न करा सकते है।

परिवर्तन कृषि सन्देश का यह अंक खरीफ विशेषांक के रूप में किसानो को समर्पित है आशा है कि यह प्रकाशन किसानो तथा कृषि से जुड़े लोगो के लिए उपयोगी साबित होगा।

डॉ अमरनाथ तिवारी, कृषि सलाहकार

धान के प्रभेदो का चुनाव - खेत की स्थिति के अनुसार करे

खेत की स्थिति तथा फसल की अवधि के अनुसार धान की प्रजातियों का चुनाव निम्न सारणी की सहायता से किया जा सकता है।

परिस्थितियां	प्रजातियाँ	अवधि
उपरी जमीन	प्रभात, सहभागी, शुष्क सम्राट, बन्दना, अंजलि, सी आर धान 40, एन डी आर 97	95 –115 दिन
मध्यम जमीन	हजारी धान, अभिषेक, सीता, ललाट, सहभागी, सरोज	115–135 दिन
निचली जमीन	यम टी यू 70 29 ,स्वर्ण सब 1, बी पी टी 5204,सरजू 52, एन डी आर 359 ,सत्यम,राजेंद्र स्वेता राजेंद्र महसूरी 1 राजश्री	135 –155 दिन
सुगन्धित	राजेंद्र सुवासिनी, राजेंद्रा कस्तूरी	130–140 दिन
संकर (हाइब्रिड)	एराइज 6444 .ऐरैज 6129	120–145 दिन

जीरो टिल से धान की सीधी बुआई - समय की मांग

इधर गत कई वर्षो से वर्षा का अभाव एवं मजदूरो की भारी कमी महसूस की जा रही है किसान भाई अब सीधी धान की बुआई की आवश्यकता महसूस कर रहे हैं अगर सीधी धान की बुआई में निम्न बातों का ध्यान दिया जाए तो रोपाई के बराबर पैदावार प्राप्त की जा सकती है सीधी बुआई के प्रमुख बिंदु निम्नवत है –

- धान की सीधी बुआई मध्यम एवं निचली जमीन में जहां पानी ठहरता हो उपयुक्त होता है
- कम/मध्यम अवधि वाले धान के प्रभेदो का चुनाव करना चाहिए। कम अवधि वाले धान नरेन्द्र 97, पी यन आर 381, प्रभात तथा मध्यम अवधि राजेंद्र श्वेता, नरेन्द्र 359 की बुआई करें
- धान की सीधी बुआई हेतु नत्रजन : फॉस्फोरस : पोटाश (12:32:16) का जीरो टिल मशीन से बुआई के समय प्रयोग करना चाहिए
- बुआई हेतु 10–12 किलो ग्राम धान का बीज/एकड़ के हिसाब से लेकर पानी मे 12–14 घंटे तक भिंगो देते हैं तत्पश्चात उसे छानकर छाये में 3–4 घंटे डाल देते हैं। इस प्रकार इन बीजो को लेकर जीरो टिल मशीन से बुआई कर देते हैं।
- जीरो टिल मशीन से खेत में बुआई के समय प्रयाप्त नमी होनी चाहिए
- धान की सीधी बुआई हर हालत में मानसून आने के 15–18 दिन पहले संपन्न कर लेनी चाहिए ऐसा करने से धान की जड़े अपना स्थान बना लेती है बारिस प्रारम्भ होने पर धान ऊपर निकल जाता है वर्षा प्रारंभ होने के पश्चात धान की बुआई करने पर खरपतवार तथा धान साथ–साथ निकलते हैं खरपतवार की बढवार तेजी से होती है जो धान को दबा देती है।
- धान की बुआई के दुसरे दिन पेंडीमेथालिन 1.25 ली / एकड़ के हिसाब से छिडकाव करना चाहिए छिडकाव खरपतवारों के जमाव से पहले होना चाहिए इस खरपतवार नाशक से 25–30 दिन तक खरपतवारों का जमाव रुक जाता है पुनः 25 दिन बाद आवश्यकतानुसार नोम्नी गोल्ड का छिडकाव करना चाहिए
- धान की कन्तिक अवस्थाओं जैसे बाल निकलने की अवस्था, दुग्धावस्था तथा दाना भरने की अवस्था पर नमी बनाये रखना अतिआवश्यक है
- समय – समय पर फसल की निगरानी करते रहे तथा आवश्यकतानुसार कीटनाशको तथा फफुन्द्नाशकों का प्रयोग करे।

पैडी ट्रांस्प्लान्टर से धान की रोपाई : कुछ खास बाते की

1. जिस खेत में मशीन द्वारा रोपाई की जानी हो उसे 15–20 दिन पहले लैजर लेवेलर द्वारा खेत समतल करा देना चाहिए ताकि बिचडो को सही ढंग से लगाया जा सके।
2. अगर मशीन द्वारा रोपाई बिना लेवा की अवस्था में की जानी है तो रोपनी से 7–10 दिन पूर्व खेत में खरपतवारों पर एक्सेल मेरा 71 का छिड़काव करना चाहिए
3. रोपनी से 12 घंटा पूर्व खेत में 1–2 से. मी. जल भर देना चाहिए। बिना कादो किये गए खेत में राइस ट्रांस्प्लान्टर मशीन द्वारा रोपनी करने के पूर्व खेत को कल्टीवेटर से जोतकर समतल कर देना चाहिए यदि खेत में पानी जमा हो तो रोपनी से 12–14 घंटे पूर्व खेत से जल को निकाल देना चाहिए ताकि मिट्टी अच्छी तरह बैठ जाये इसके बाद 1 से. मी. खड़े पानी में मशीन द्वारा रोपनी की जाती है मशीन द्वारा रोपाई के निम्न फायदे है।
    - मशीन से रोपाई में 20 श्रमिक / प्रति एकड़ की बचत हो जाती है
    - वर्षा कम तथा देरी की स्थिति में भी रोपाई संभव होता है
    - 12–14 दिन का विचडा उपयुक्त होता है।
    - पंक्ति से पंक्ति एवं पौधों से पौधों की दुरी एक सामान रहती है
    - उपज परम्परागत रोपाई के बराबर मिल जाती है
    - खेती की लागत में कमी आती है।
    - राइस मैट नर्सरी तकनीक से धान के विचडो का उत्पादन कर बिक्रय कर लाभ अर्जित किया जा सकता है।

खरीफ में शुद्ध मक्का की अधिक पैदावार कैसे ले -

- वर्षा सुरु होने के 10–15 दिन पहले ही मक्का की बुआई संपन्न कर लेना चाहिए। ऐसा करने से लगभग 15 प्रतिशत अधिक उपज प्राप्त होगी।
- बुआई मेंढ़ बनाकर करनी चाहिए यह कार्य रिज प्लान्टर की सहायता से कर सकते हैं बीज दर 6–8 किलो / एकड़ रखना उचित होगा।
- कतार से कतार की दुरी 60–75 से.मी. तथा पौधों से पौधे की दुरी 18 –20 से. मी. रखनी चाहिए। कटाई के समय प्रति वर्ग् मीटर कम से कम 10–11 पौधे होनी चाहिए।
- नत्रजन का आधा भाग एवं फॉस्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा बुआई के समय तथा शेष आधी मात्रा को दो बराबर भागो में बाटकर जब फसल घुटनों की ऊंचाई तक आ जाय तथा शेष नत्रजन फुनगियों के निकलने पर करे।
- बुआई के दूसरे दिन एट्राजिन 50: डब्लू पी का पानी में घोल बनाकर स्प्रेयर से छिडकाव करें
- यदि वारिश न हो तो तो पुष्पन एवं बालों में दानो के भराव के समय सिंचाई अवश्य करें

अरहर एवं मक्का की सहफसली खेती में ध्यान दे -

- अरहर के अनुसंशित प्रभेद पूसा 9 (250–60 दिन) अथवा बहार (260–65 दिन) अथवा नरेन्द्र–1 (265 – 275 दिन) की बुआई करें संकर मक्का की शक्तिमान 1 अथवा शक्तिमान 2 की बुआई करें।
- अरहर मक्का की बुआई रिज प्लान्टर से मेंढ़ पर करना लाभकारी होगा। इसके लिए रिज प्लान्टर से 45 से मी पर मेंढ़ बनाये, पहले मेंढ़ पर अरहर फिर दुसरे मेंढ़ पर मक्का फिर तीसरे मेंढ़ पर अरहर की बुआई करें, इस प्रकार अरहर की कतार से कतार की दुरी 90 से. मी. पर होगी तथा दो अरहर के कतार के बीच एक लाइन मक्का की होगी।
- अरहर तथा मक्का की सहफसली बुआई 15 जून तक संपन्न कर लेनी चाहिए।
- अरहर का बीज दर ८ कि. / एकड़ अथवा 250 ग्राम / कठा तथा मक्का 5–6 कि. / एकड़ अथवा 150 ग्राम / कठा रखना चाहिए।
- मक्का की फसल को मोचा निकलने से दाना भरने तक नमी बनाये रखना उचित होगा। इसी प्रकार अरहर में शाखा बनने तथा फली में दाना भरने की अवस्था पर सिंचाई करने से उपज में ज्यादा होती है।
- खरपतवार नियंत्रण के लिए पेंडीमेथेलिन खरपतवारनाशक का छिडकाव बुआई एवं जमाव से पहले करें।

खरीफ में दलहनी फसलों की खेती की प्रमुख बाते-

- कृषि विश्वविद्यालयों /शोध संस्थानों से अनुसंशित प्रभेदो की प्रमाणित बीजो की बुआई करे।
- दलहनी फसलो में राइजोबियम कल्चर, फॉस्फोरस तथा गंधक का अवश्य प्रयोग करे।
- अरहर की बुआई 75–90 से. मी. लाइन से लाइन की दुरी पर करे। पौध से पौध की दुरी 20–25 से. मी. होनी चाहिए। प्रति वर्गमीटर अरहर की पौधों की संख्या 7–8 होनी चाहिए।
- मुंग /उरद की बुआई 45 से. मी. पर लाइन में करनी चाहिए। उरद/मुंग की प्रति वर्गमीटर पौधों की संख्या 33–40 होनी चाहिए।
- अत्यधिक जल भराव तथा उकठा रोग से बचने के लिए मेंड़ो पर दलहनी फसलो की बुआई करनी चाहिए।
- शाखा बनते समय तथा दाना भरते समय दलहनी फसले नमी के प्रति संवेदनशील होती है। अतः इन अवस्थाओं पर आवश्यकतानुसार सिंचाई अवश्य करे।

तिल की वैज्ञानिक खेती - खर्च कम लाभ ज्यादा

- कृष्णा (काला तिल) प्रभेद की बुआई करे, यह 85–90 दिन में तैयार हो जाती है तथा सामान्य रूप से 2–3 कुन्तल उपज /एकड़ प्राप्त हो जाती है
- प्रगति (यम टी 75 सफेद तिल) की औसत उपज 3 कु. /एकड़ है 90 दिन में यह पककर तैयार हो जाती है।
- एक किलो /एकड़ के हिसाब से तिल की बुआई करे
- बुआई मध्य जून से मध्य जुलाई तक करे

सहयोगी संस्थाएँ

सीरियल सिस्टम इनिसिएटीव् फॉर साऊथ एशिया पटना

वयोवार्सिटी इन्टरनेशनल फॉर साऊथ एशिया नई दिल्ली

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान क्षेत्रीय केन्द्र पूसा, समस्तीपुर

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद रिसर्च कॉम्पलेक्स पूर्वी क्षेत्र पटना

कृषि विभाग आत्मा एवं संबधित विभाग, सिवान।

परिवर्तन PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास
नरेन्द्रपुर जीरादेई सिवान

संपर्क सूत्र
डा० अमरनाथ तिवारी
कृषि सलाहकार
+91 - 7759863367
amarnath.tewari@takshila.net

बरसाती प्याज की खेती - नया आयाम

बिगत कुछ वर्षो से उत्तरी भारत में खरीफ में प्याज की खेती हो रही है अगस्त के प्रथम सप्ताह में इसकी रोपाई करके किसान भाई हरा साग 50–60 दिनों में बेचकर अच्छा पैसे कमा सकते हैं। प्याज की गांठ 90–100 दिनों में तैयार हो जाती है जिससे किसान उसे बेचकर अधिक आमदनी कर सकते हैं। इसकी खेती के प्रमुख बिंदु इस प्रकार है –

- जून के तीसरे सप्ताह में पौध तैयार करने हेतु खेत की उठी हुई क्यारी बना लेनी चाहिए। क्यारी 3 मीटर लम्बी तथा 0.60 मी चौड़ी बनानी चाहिए
- 3–4 किलो बीज प्रति एकड़ रोपाई के लिए प्रयाप्त होती है।
- अग्री फाउंड डार्क रेड खरीफ की खेती के लिए प्याज की उपयुक्त प्रजाति है।
- प्रयाप्त मात्रा में गोबर की सड़ी हुई खाद रोपाई के पहले खेत में मिला देनी चाहिए रोपाई के एक दिन पहले 1.5 किलो यूरिया, 4.5 किलो सिंगल सुपर फॉस्फेट तथा 3. 75 किलो मुरेट आफ पोटाश प्रति कठा के हिसाब से खेत में मिला देनी चाहिए
- प्याज के पौध की रोपाई अगस्त के प्रथम सप्ताह में कर देनी चाहिए
- रोपाई से पूर्व पौधों की जड़ो को 0.1ः कार्बेन्डाजिम 1ः मोनोक्रोटोफोस के घोल में डुबोकर लगाने से पौधे स्वस्थ रहते हैं।
- कतार से कतार 15 सेंटीमीटर तथा पौध से पौध 10 से. मी. दुरी रखकर रोपाई करनी चाहिए।
- खरपतवार नियंत्रण हेतु पेंडीमेथेलिन 1.25 ली. को 100–120 ली. पानी /एकड़ अथवा 185 मि. ली. दवा को 15 ली. पानी में घोल बनाकर बुआई /रोपाई के बाद एवं जमाव से पहले छिड़काव करे, आवश्यकतानुसार 1–2 निराई करे।
- खड़ी फसल में 3 किलो यूरिया /कठा को दो बार बराबर – बराबर मात्रा में प्रयोग करे।
- थिप्स कीट हेतु साईंपरमेथलिन 10 इ सी को 0.1ः घोल बनाकर छिडकाव करे
- रोग से बचने के लिए बीज को थिरम से उपचारित करना चाहिए।
- सामान्य रूप से प्याज की उपज 100–125 कु./एकड़ अथवा 4–5 कुं./कठा हो जाती है।

परिवर्तन में कृषक जागरूकता संगोष्ठी का आयोजन

हरियाली कृषि ज्ञान केन्द्र में कृषक जागरूकता संगोष्ठी दिनांक 8 जनवरी 2016 को 11.30 बजे आयोजित की गई। संगोष्ठी में जिला विकास प्रबंधक, नाबार्ड, सिवान, श्री आफताब साहिब, जिला कृषि पदाधिकारी, सिवान श्री राजेन्द्रकुमार वर्मा, असिस्टेंट डायरेक्टर, पौध रक्षा, सिवान, श्री अरविन्द कुमार सिंह, डॉ होडा, फिशरी वैज्ञानिक, बिहार कृषि वि० वि०, सबौर, जीरादेई प्रखंड के कृषि अधिकारी, श्री कामेश्वर प्रसाद तथा बागबानी अधिकारी श्री संतोष वर्मा, ग्रामीण बैंक मेनेजर, नरेन्द्रपुर आदि लोगो ने भाग लिया। कुल 81 कृषको ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। नाबार्ड के श्री आफताब साहिब ने कृषि एवं ग्रामीण विकास से सम्बंधित विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाला। नाबार्ड के सहयोग से परिवर्तन कृषको के हितार्थ फार्मर्स प्रोडूसर कंपनी बनाकर किसानों को उनके उत्पाद का उचित मूल्य हेतु बाजार से जोड़ा जा सकता है। जिला कृषि पदाधिकारी श्री वर्मा ने कृषि यंत्रीकरण पर मिल रही सुबिधाओं का उल्लेख किया। ओर्गानिक फार्मिंग हेतु कृषको का एक समूह बनाकर ऑनलाइन पंजीकरण की प्रक्रिया को भी बताया गया। श्री अरविन्द कुमार सिंह, सहायक निदेशक (पौध रक्षा) ने जैविक प्रोत्साहन योजना, बीज शोधन, फेरोमन ट्रैप आदि पर मिलने वाले सुबिधाओं का किसानो को जानकारी दी। अरहर तथा सरसों की फसल में लगने वाले लाही /फलिबेधक कीटों का बहुत सस्ता एवं सरल नुस्खा बताया। सरसों में लाही के नियंत्रण हेतु पिला डिब्बा जिसमे ग्रीस लगा हो खेत में 10–15 जगह गाड दे। लाही कीट उन डिब्बो पर आकर चिपक जायेगी, फूल आने से पहले लाही का नियत्रण सर्फ के घोल को छिड़क कर भी किया जा सकता है। डॉ होदा ने बिस्तार से मछली पालन एवं मुर्गी पालन से लाभ कमाने के नुस्खो पर चर्चा किया। मैनेजेर, ग्रामीण बैंक, नरेन्द्रपुर ने किसानों को लोनिंग के बारे में समझाया तथा किसी भी असुविधा हेतु सीधे संपर्क करने के लिए आश्वाशन दिया। कार्यक्रम का संचालन डॉ तिवारी ने किया तथा अवगत कराया कि किसानों को गेंहू की खेती में लागत कम करने की दिशा में परिवर्तन अपने कार्य क्षेत्र में 134 एकड़ में जीरो टिल तकनीक से गेंहू कि बुआई कराई है सभी किसान संतुष्ट है। खरीफ में अरहर के साथ कपास की इन्टर क्रोप्पिंग करने का प्रस्ताव है। इससे किसानों को दाल कि अच्छी कीमत मिलेगी तथा कपास की पैदावार अतिरिक्त रूप से प्राप्त होगी जिससे क्षेत्र के जुलाहे लोगो को रुई की जरुरत की पूर्ति होगी।

कृषक जागरूकता संगोष्ठी के अवसर पर संबोधित करते हुए कृषि अधिकारी

महिला कृषको को खेती के गुर सिखाये जायेंगे

परिवर्तन सभागार में दिनांक 25 जून को महिला समाख्या के अंतर्गत कार्यरत सहयोगिनियों के साथ कृषि पर चर्चा हेतु एक बैठक की गई। शीसा की कृषि वैज्ञानिक डॉ मधुलिका जी, महिला समाख्या की कोआरदिनेटर सुश्री रूपा जी तथा परिवर्तन के कृषि सलाहकार डॉ ए एन तिवारी, सहायक श्री बलिंदर कुमार उपस्थित थे सडॉ मधुलिका जी महिला कृषको की खेती में भागीदारी के महत्व पर प्रकाश डाला तथा सभी महिला सामाख्या की सहयोगिनियों से अपने पंचायत से २० महिला कृषको को चिन्हित करने को कहा जिससे उनको कृषि के उन्नत तकनीको का ज्ञान कराया जा सके। डॉ मधुलिका जी ने सभी पंचायत के प्रत्येक महिला कृषको को शीसा की तरफ से 300 ग्राम मक्का का संकर बीज दिया। डॉ तिवारी ने महिलाओं को कृषि की नवीनतम तकनीको को व्यवहारिक जानकारी प्रदान करने की बात कही।

आवश्यक सूचना–

- परिवर्तन प्रांगन में स्थित पाली टनेल में बरसाती प्याज, अगेती गोभी, संकर टमाटर, वैगन, मिर्च एवं पपीता के पौधे तैयार किये जा रहे हैं किसान भाई अपनी आवश्यकतानुसार आर्डर बुक कराकर समय से प्राप्त करे।
- आम, लीची, अमरुद, आंवला आदि फलो के पौधे कृषि विश्वविद्यालाओं/ शोध संस्थाओं से मंगाकर किसानों को उचित मूल्य पर उपलब्ध कराये जाएंगे। किसान भाई अपनी आवश्यकतानुसार आर्डर देकर पौधे प्राप्त करे।
- परिवर्तन में तैयार हो रहे वर्मी– कम्पोस्ट किसान के लिए भी उपलब्ध है। इसका किसान भाई लाभ उठाएं।
- परिवर्तन में जीरो टिल मशीन, मक्का – अरहर तथा अन्य फसलों को बोने की लिए रेजेड बेड प्लान्टर, रिज प्लान्टर, मिट्टी पलटने वाला हल कृषको की उपयोग हेतु उपलब्ध है, लाभ उठाएं।

रबी दिवस का आयोजन

जीरादेई प्रखंड के ग्राम महमूदपुर में दिनांक 8 फरवरी 2016 तथा अंदर प्रखंड के हकमाहाता में 11 फरवरी, 2016 को आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में भारी संख्या में किसानो ने भाग लिया। जिला कृषि पदाधिकारी श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, आत्मा के परियोजना पदाधिकारी श्री के के चौधरी तथा प्रखंड के कृषि अधिकारी / कृषि सलाहकार भी मौजूद थे। जीरो टिल से बोये गए खेतो में जाकर फसलों का अवलोकन किया गया। किसानो ने इस विधि से खेती करने में लागत में कमी आने से संतोष व्यक्त किया तथा फसल की जमाव एवं विकास पर प्रसन्नता जाहिर की। श्री वर्मा ने किसानो को सलाह दिया कि खेती की योजना अपने खेत की स्थिति, तथा पानी की उपलब्धता तथा संसाधनों को मद्देनजर रखकर करे। दलहनी फसलो की खेती पर बल दिया। डॉ तिवारी ने किसानो को मेंढ़ पर दलहनी फसलो की बुआई का लाभ बताया।

महमूदपुर में कृषि अधिकारी जीरो टिल गेंहू की फसल का अवलोकन करते हुए

परिवर्तन प्रांगन में किसान मेला

परिवर्तन प्रांगन में दिनांक 3 मार्च को परिवर्तन किसान मेले का आयोजन किया गया। इस मेले में 500 से अधिक किसानों ने मेले का लुत्फ लिया। बहुराष्ट्रीय बीज एवं कृषि उपकरण की कंपनियों से बाएर क्रॉप केयर, यूनाइटेड फॉस्फोरस लिमिटेड, नागार्जुनप, सिंजेंता, वी यान आर, पायनियर, श्री राम फर्टिलाइजर, भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, पूसा समस्तीपुर, भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद, रिसर्च काम्प्लेक्स, पटना नेशनल हॉर्टिकल्चर एंड रिसर्च फाउंडेशन पटना, नेशनल सीड कारपोरेशन, ट्रेक्टर की कम्पनियाँ,

एवं फलों एवं औषधीय पौधों के स्टाल लगाये गए थे। मेले का मुख्य आकर्षण उन्नतशील बीज एवं फलों तथा फूलों के पौधे थे, जिसकी किसानो ने जमकर खरीदारी की। दोपहर बाद २ बजे कृषि गोष्ठी का आयोजन हुआ जिसमे जिला कृषि पदाधिकारी, शीसा, पूसा एवं पटना, बिओवेर्सिटी दिल्ली के बैज्ञानिको ने भाग लिया तथा कम लागत की खेती, विविधिकरण, समेकित कृषि प्रणाली पर अपने विचार रखे तथा किसानो की प्रश्नों का निराकरण किया, संचालन डॉ तिवारी ने किया। धन्यवाद प्रस्ताव परिवर्तन किसान क्लब के सचिव श्री सुधीर कुमार श्रीवास्तव ने किया।

किसान मेले में बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा लगाए गए स्टाल

सेतिका जी ने किसान चौपाल का जायजा लिया

परिवर्तन कार्य क्षेत्र के अंतर्गत बिभिन्न गाँव खेम भटकन,बेल्वासा ,महमूद पुर,लाछिराम पडरी,सलाहपुर में किसान चौपाल का आयोजन किया गया। खेम भटकन के किसान चौपाल (6 बजे सायंकाल) में परिवर्तन की तरफ से सुश्री सेतिका जी, डॉ राजेश्वर मिश्रा तथा श्री अलोक अनुलम, तथा कृषि वैज्ञानिक डॉ तिवारी एवं उनके सहयोगी श्री बलिंदर यादव ने भी भाग लिया। सर्वप्रथम डॉ तिवारी ने सभी आगंतुको का स्वागत किया तथा किसानो से रबी की फसल विशेषकर गेंहू की पैदावार पर बदलते हुए जलवायु के प्रभाव की चर्चा की। किसानो ने गेंहू में फूल आने एवं दाना भरने की अवस्था पर पछुआ हवा से नुकसान के बारे में बताया। दो वर्ष से किसानो के उपर लगातार सुखा की मार की समस्या बताई गई। जल की बचत,उपयोग क्षमता बढाने एवं कुशल जल प्रबंधन पर बल दिया गया। तथा इसके लिए सामूहिक रूप से प्रयास हेतु आग्रह किया। डॉ तिवारी खरीफ में धान की सीधी बुआई /मशीन से रोपाई हेतु सामूहिक नर्सरी तैयार करने, कम अवधि वाले धान की प्रजाति नरेन्द्र 97, सहभागी, शुष्क सम्राट, पी एन आर 387 आदि की बुआई पर बल दिया। अरहर तथा मक्का की बुआई मेंढ़ पर करने का आह्वान किया तथा परिवर्तन में उपलब्ध कृषि यंत्रो के उपयोग की जानकारी दी।

खेम भटकन में आयोजित किसान चौपाल

किसान गोष्ठी-कपास वैज्ञानिक के साथ

केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर के पूर्व निदेशक डॉ पी सिंह ने गरार तथा सलाहपुर गाँव में किसानों के साथ क्षेत्र में कपास की खेती की संभावनों पर विचार–विमर्श किया। किसानों ने बताया कि कपास की खेती 35–40 वर्ष पहले होती थी। कपास अरहर के साथ मिलवा फसल के रूप में उगाया जाता था। अरहर पहले कट जाती थी कपास बहुत देर से कटता था जिससे जानवर बहुत नुकसान करते थे, इस वजह से लोगों ने कपास बोना छोड़ दिया। डॉ सिंह मध्यम अवधि के बी टी कॉटन के साथ अरहर की सहफसली खेती की सलाह दी, अरहर तथा कपास की सहफसली खेती (6:2) समान अवधि वाले प्रजाति लेकर बुआई की जा सकती है किसानों ने कपास की खेती करने हेतु अपनी रूचि जाहिर की।

डॉ पी सिंह, पूर्व निदेशक, केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर किसानों के साथ

किसानों की बातें, उनकी जुबानी

संबोधन

मै प्रकाश सिंह ग्राम सलाहपुर प्रखण्ड अंदर का रहनेवाला हूँ हमारे गाँव के अरुण सिंह पहले से ही परिवर्तन जाते आते थे, मै उनसे बात करके नवम्बर में परिवर्तन गया था वहां से गेंहू का बीज लाकर जीरो टिलेज से गेंहू का बावग किया था। हमारे खेत को देखकर गाँव के लोग मजाक उड़ाने लगे मेरे दादा जी को भी गाँव के लोग भड़काने लगे कि आपके खेत में कुछ नहीं होगा दादा मझे बुरा दृभला करने लगे लेकिन हम घबडाये नहीं जब हमारे खेत में बिया जाम गया तब लोग प्रशंसा करने लगे और 20 दिन बाद पटवन किया और खाद डाले तो सब लोग मेरी फसल देखकर हैरान हो गए और हमारे दादा जी भी खुश हो गए तब से मै परिवर्तन से बिया, खाद. दवा लाता हूँ तथा उन लोगो से सलाह लेकर खेती करता हूँ इस सीजन में परिवर्तन के लोगो के बताने पर मेंढ़ पर अरहर–मक्का की बोआई किया हूँ और धान की भी जीरो टिलेज से बुआई किया हूँ तथा एक नया फसल सोयाबीन जो कभी नहीं बोया गया परिवर्तन की लोगो के कहने पर अपने खेत में ट्राई कर रहा हूँ।

प्रकाश सिंह, सलाहपुर, आंदर

परिवर्तन में हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र की स्थापना हुई है वहां मैं तथा अपने गाँव के जयवन्त सिंह को लेकर अक्सर वहां किसान मीटिंग में जाते हैं वहां पर कम खर्च करके उपज बढाने की बात बताई जाती है वहां से मै जीरो टिल मशीन से गेंहू की बोआई की, अभी मक्का के साथ अरहर की बोआई परिवर्तन से मेंढ़ बनाने वाली मशीन से दोनों फसलों को एक साथ बुआई किया हूँ पिछले वर्ष हमने जीरो टिल से गेंहू की बोआई की थी खर्च में कमी आई थी तथा पैदावार ज्यादा मिला था हम लोगो को परिवर्तन किसान क्लब से यूरिया कीटनाशक, खर नाश करने की दवा आदि भी सुलभ हो जाती है मेरा मानना है की परिवर्तन द्वारा इसी तरह खेती का ज्ञान तथा कृषि यन्त्र, दवा, बीज की सुविधा सुलभ हो जाये तो क्षेत्र के किसानों की दशा एवं दिशा बदल जायेगी

उमाशंकर सिंह, रुइयाँ बंगरा, जीरादेई प्रखण्ड

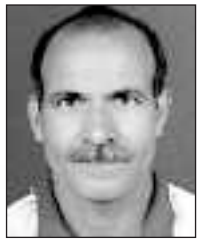

हरियाली कृषि ज्ञान केंद्र से खेती सम्बन्धी नये तरीके से नये यंत्रों द्वारा जैसे जीरो टिल मशीन से गेंहू– धान की फसल बिना जुताई के बोने का अनुभव किया मेरे गाँव में किसान चौपाल लगाकर तथा परिवर्तन में किसान मीटिंग करके सभी किसान भाइयों को खेती कराने का तरीका, उन्नत किस्म का बीज तथा खपतवार नाश करने की दवाई का नाम तथा उपाय बताया जता है। हम लोगो को बहुत लाभ मिलता है हम अपने गाँव में सब लोगो को बताते है कि परिवर्तन चलो वंहा से हम लोगो को खेती किसानी का लाभ मिलेगा अब लोग समझने लगे है।

अरुण सिंह, सलाहपुर, प्रखण्ड आंदर

मै बलिराम सिंह ग्राम /पोस्ट बर्हुलिया, ग्राम पंचायत नरेन्द्रपुर, परिवर्तन किसान क्लब का सदस्य हूँ मै परिवर्तन के के दिशा निदेश पर कृषि कार्य करता हूँ गत वर्ष मैंने परिवर्तन की देखरेख में मकई और अरहर की संयुक्त खेती मशीन से मेंढ़ पर की थी। इस विधि द्वारा मैंने अल्प खर्च तथा बिना श्रमिक लगाए उत्पादन प्राप्त किया, 6 कठा में 3 कुंतल मकई तथा 1 कुन्तल 80 किलो अरहर का उत्पादन किया, मेरे अनुभव से मैंने अरहर बिना किसी लागत के प्राप्त किया। मुझे सारा लाभ ही लाभ मिला, मै किसान भाइयो से अनुरोध करता हूँ की आप भी इसी विधि का प्रयोग करे।

बलिराम सिंह, बर्हुलिया

Design & Production : imagica graphics